पृथ्वी एक महत्वपूर्ण पर्यावरणिक उपादान

डॉ0 देवकी नंदन कुमार*

सारांश – पर्यावरण को दो भागो में विभक्त किया जाता है रू–
1. पृथ्वीस्थ पर्यावरणिक उपादान। 2. नभस्थ पर्यावरणिक उपादान।

पृथ्वीस्थ जितने भी पर्यावरणिक उपादान है उनमे पृथ्वी का महत्त्व सर्वाधिक है। पृथ्वी शब्द "पृथ प्रथने धातु से बना है। अमरकोष में पृथ्वी के 27 नामो की चर्चा मिलती है। मनुष्य के जीवन का आधार पृथ्वी है। इसे "रसा" भी कहा जाता है। क्योकि यह अपने अन्तस से अपने पुत्रो को जल प्रदान करती है। प्राणी मात्र का भरण–पोषण करने के कारण यह "विश्वम्भरा" कही जाती है। पृथ्वी के गर्भ से जल, कोयला, खनिज पदार्थ,मणि रत्न आदि बहुमूल्य पदार्थ मिलते है, जिसके कारण इसे "वसुन्धरा" कहा जाता है। सम्पूर्ण चर– अचर प्राणियों के जीवन का आधार पृथ्वी ही है। इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

माता और मातृभूमि को स्वर्ग से भी बड़ा बताया गया है। तभी तो कहा गया है–"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि"। जब पृथ्वी संरक्षित होगी तभी मानव जीवन भी सुरक्षित होगा। 22 अप्रैल को इसी उद्देश्य से पृथ्वी दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर हम सभी पृथ्वी को स्वच्छ शुद्ध एवं हराभरा रखने का संकल्प लेते है। जल–जीवन–हरियाली कार्यक्रम भी सरकार द्वारा विशेष रूप से चलाया जा रहा है। वृक्षारोपण को बढ़ावा देकर हम धरती को तथा अपने आसपास के पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुन्दर बना सकते है। तभी तो कहा जाता है ।

धरती माता करे पुकार। हराभरा कर दो संसार।

सौर जगत का वह ग्रह जिसपर हमलोग रहते है धरती है। यह सौर जगत का एकमात्र ग्रह है। जिस पर जीवन संभव है। इसी कारण से पृथ्वी एक अनोखा ग्रह कही जाती है। यह पर्वतों, वनों, वनस्पतियों, नदियों,तालाबों, वन्यजीव–जंतुओं आदि से भरी पूरी है। पर्वत से अच्छादित इस पृथ्वी को समतल उपजाऊ एवं सांसारिक लोगो के व्यवहार के लिए उपयुक्त बनाना आवश्यक था। अतः पृथु – ययाति आदि राजाओं ने इसे समतल बनाने का भगीरथ प्रयास किया।निरुक्त में "प्राथनात पृथ्वी" का उल्लेख मिलता है।

अमरकोश में पृथ्वी के 27 नामों की चर्चा मिलती है । जो इस प्रकार है। भू, भूमि, अचला, धरा, अनन्ता, रसा, विश्वम्भरा, स्थिरा, धरित्री, धरणी, क्षोणी, ज्या, काश्यपी, उर्वी, वसुन्धरा, गोत्रा, कु, पृथिवी, पृथ्वी, क्षमा, अवनी, मेदिनी, मही, गहवरी, धात्री, विपुला एवं जगती।[1] इसके अतिरिक्त अमरकोष के प्रक्षिप्त श्लोकों में गौरिला, कुम्भिनी, भूतध

***(सहायक शिक्षक)गाँधी स्मारक विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पचरुखी सिवान।**

ात्री, रत्नगर्भा, सागरंम्बराआदि नामों का भी उल्लेख मिलता है।इन पर्यावाची शब्दों के विश्लेषण में पृथ्वी विषयक अक्षय रहस्यों का उदघाटन होता है। "भू " धातु सत्तात्मक है। मनुष्य के जीवन का आधार पृथ्वी ही है। इसी पर सभी का पालन–पोषण होता है। अतःअपनी अचल सत्ता हेतु विख्यात पृथ्वी को भू और भूमि शब्द से अभिहित किया गया है। यह सागर के कोलाहल पूर्ण ज्वार–भाटा की तरह क्षणिक एवं चंचल नहीं है। अतः इसे अचला कहा जाता है।मानव जीवन तथा स्थावर जंगम सभी को प्रशस्त आयत एवं संचरणशील जगह देने के कारण यह अनन्ता कही गयी है। इसकी कोई सीमा नहीं है। अतः इसे अनन्ता कहते है। पृथ्वी सबोंको धारण करती है। अतः इसकी एक संज्ञा धरा भी है। इसी अर्थ में धरित्री, धरणि आदि शब्द भी परिभाषित किये गये है। पृथ्वी का एक–एक कण जल से तृप्त है। यह अपने अन्तस से अपने पुत्रों को जल प्रदान करती है।अतः इसे रसा कहा गया है। इसका एक नाम विश्वम्भरा है। विश्वम्भरा का अर्थ है "विश्वं विभर्ति" अर्थात जो प्राणी मात्र का भरण–पोषण करती है उसे विश्वम्भरा कहा जाता है। इसके तीन नाम– वसुमती, वसुधा तथा वसुन्धरा इसके अन्तस में स्थित जल, मणि, कोयला तथा धन से परिपूर्णता की सूचना देता है। आज के वैज्ञानिक खोज पृथ्वी के वसुन्धरा शब्द को सार्थक कर रहे है। पृथ्वी के गर्भ में न केवल जीवनदायक जल है, अपितु शक्ति का सर्वोत्तम स्रोत डीजल, पेट्रोल, मिट्टी तेल, आदि अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ है। ये पदार्थ पृथ्वी के पेट को चीर कर निकाले जाते है। जो आधुनिक वैज्ञानिक रूप से वर्धमान संस्कृति का आधार है। अगर पृथ्वी के अन्तस से ये पदार्थ न निकले तो विश्व का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। रेल, बस, वायुयान, नदी, तालाब, पर्वत, भवन, पेड़–पौधों आदि सभी का आधार पृथ्वी ही है। आर्यलोग विछावन से उठते ही पृथ्वी को निम्न मन्त्र से प्रणाम करते है–

समुंद्रवसने देवि पर्वत स्तन मंडले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पदस्पर्श क्षमस्व में।।[2]

जिस पृथ्वी पर पैर रखने में आर्यगण क्षमायाचना करते थे। आज उसी पृथ्वी के अन्तस को वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा छेदित किया जाता है। वृक्ष लता से आच्छादित पर्वत को नस्ट कर दिया है।अनेक औषधीय गुणों से परिपूर्ण वन का विनाश किया जाता है।उद्यान वाटिका को उखाड़कर घर का निर्माण किया जाता हैं। वस्तियों को हटाकर नहर खोदा जाता है। नदियों को विशाल तटबंधों द्वारा बाँध दिया जाता है। मानव के इस कृत्य से पृथ्वी पल –पल सीदित हो रही है। वसुधा जोरो से रो रही है। पृथ्वी कीटाणुनाशक खाद आदि दवाओं से बंजर होती जा रही है। मानव का दीर्घ जीवन प्रदान करने वाली पृथ्वी आज जीवन विनाशक की भूमिका में आ गई है।

वाल्मीकि रामायण में सगरपुत्रो द्वारा अपने पूर्वजो को खोजने के लिए सम्पूर्ण पृथ्वी को खोदने का संकल्प लिया गया। सारी पृथ्वी का चक्कर लगाने

के बाद जब अश्वमेघ यज्ञ का अश्व न मिला तो सगर के महाबली पुत्रो ने एक–एक योजन भूमि का बाँटवारा कर अपने बलिष्ट भुजाओ के द्वारा इसे खोदना आरम्भ किया। उनकी भुजाओ का स्पर्श वज्र के स्पर्श की भाँति दुःसह था। पृथ्वी के इस मोटी परत को तोड़कर पाताल लोक जाने हेतु संकल्पित राजकुमारों के हाथो से वज्र तुल्य सूढ़ और अत्यन्त दारुण हलो द्वारा सब ओर से विदीर्ण की जाती हुई वसुधा आर्तनाद करने लगी–

शूलैरशनि कल्पैश्च हलैश्चाति सुदारूण रूै।
भिद्यमाना वसुमती ननाद रघुनन्दनः। ।[3]

इस पृथ्वी ध्वंस के क्रम में राजकुमारों द्वारा मारे जाते हुए नागो, असुरो, राक्षसों तथा दूसरे प्राणियों के आर्तनाद से वातावरण परिव्याप्त हो गया। इस प्रकार सगरपुत्रों ने साठ हजार योजन भूमि खोद डाला।

क्रुद्ध विश्वामित्र को देखकर देवताओ के मन में भी भय समा गया। महान भय से जिसप्रकार देवगण काँप उठे उसी प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी भी काँपने लगी। भगवन राम के वन गमन के समय अयोध्यापुरी भय और शोक से प्रज्ज्वलित होकर उसी प्रकार काँपने लगी जैसे देवराज इंद्र से रहित मेरु पर्वत सहित पृथ्वी डगमगाने लगती है।

वाल्मीकि रामायण–

ततस्त्वयोध्या रहिता महात्मना, पुन्नदरेणेव मही सपर्वता ।
चचाल घोरं भयशोकदीपिता, सनागयोधाश्वगणा ननाद च।।[4]

पृथ्वी के इस प्रकार विदीर्ण होने से व्याकुल प्राणीजाति की दुर्दशा का हृदयंगम कर ब्रह्मा ने कहा –पृथ्वी का यह भेदन सनातन है। प्रत्येक कल्प में "श्रुति "स्मृतियों में आये वृतान्त से ये बाते स्पष्ट है। फिर पृथ्वी के साथ इस निर्ममता पूर्ण व्यवहार का भविष्य सगरपुत्रों का विनाश स्वयं सिद्ध है।

पृथ्वी को विष्णुपत्नि के रूप में चित्रित किया गया है। राजा विष्णु के अवतार कहे जाते है। अतः उन्हें भी भूपति की संज्ञा दी जाती है। विदेशी शत्रुओ से राष्ट्रभूमि की सीमा की रक्षा करना पृथ्वी को नष्ट करने वाले विधायक तत्वों को दण्ड देकर नियंत्रित करना तथा कृषि योग्य भूमि बनाने में उसे संचित करने में किसानो की सहायता करना राजा का सर्वोच्य अधिकार एवं प्रथम कर्तव्य है। हमें भी इस मातृस्वरूप धरती माँ की रक्षा करना चाहिए।

सन्दर्भ–सूची

1. अमरकोष–भूमिवर्ग – 560–63
2. नित्यकर्मपद्धति–भूमि प्रार्थना ,पृष्ठ सं0 – 02
3. वाल्मीकि रामायण–बालकाण्ड सर्ग – 39 ,श्लोक – 11
4. वाल्मीकि रामायण–.अयोध्याकाण्ड सर्ग दृ 41 ,श्लोक दृ 21

महिला हिंसा एक समस्या एवं समाधान : एक विश्लेषण

डॉ. राजेश कुमार*

सारांश

यह लेख महिला हिंसा पर आधारित है। इसके अन्तर्गत हिंसा एवं महिला हिंसा के अर्थ को समझाते हुए महिला के वैदिक, उत्तर वैदिक एवं आधुनिक युग की परिस्थितियों के सम्बन्ध में भी चर्चा की गयी है, साथ ही साथ महिला हिंसा के स्वरूप, कारणों एवं इसके विद्वेषपूर्ण सोच पर चर्चा करते हुए महिला अधिनियम को भी उल्लेखित किया गया है। परिणाम यह है कि महिला हिंसा में सुधार हेतु शिक्षा, रोजगार एवं सभी क्षेत्रों में उसकी भागीदारी अनिवार्य है। लेकिन अविकसित एवं विकासशील देश में जहाँ शिक्षा एवं गरीबी अपने निम्नतम स्तर पर है वहाँ महिला हिंसा की अधिकता भी है।

परिचय

हिंसा एक सार्वदेशिक और सार्वकालिक अवधारणा है। वर्तमान युग में इसका विविध रूपों में विस्तार हुआ है। इनमें महिला हिंसा भी एक प्रमुख प्रकार है। मात्रात्मक अंतर के बावजूद महिलाओं के प्रति हिंसा विश्व में सर्वत्र विद्यमान है। लेकिन अविकसित एवं विकासशील देशों में जहाँ शिक्षा एवं गरीबी अपने निम्नतम स्तर पर है वहाँ महिला हिंसा अपने चरम पर है।

हिंसा का अर्थ : प्रचलित अर्थ में किसी भी व्यक्ति व प्राणी मात्र के प्रति बल प्रयोग, मारपीट, शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना पहुंचाने को हम हिंसा का नाम देते हैं। सूक्ष्म अर्थ में प्राणी मात्र को जाने–अनजाने, मनसा, वाचा, कर्मणा आदि से कोई कष्ट पहुंचाता है तो वह हिंसा की श्रेणी में आता है।

महिला हिंसा : दुनिया के हर देश में मात्रात्मक अंतर के बावजूद महिलाओं के प्रति हिंसा विभिन्न रूपों में विद्यमान है। मेक्सिको में 95 प्रतिशत महिला श्रमिकों का यौन उत्पीड़न झेलना पड़ता है, पाकिस्तान में 99 प्रतिशत गृहणियाँ अपने पतियों द्वारा पीटी जाती हैं। कनाड़ा की हर चौथी महिला जीवन में एक बार शारीरिक रूप से प्रताड़ित होती है। फिलीपींस में सेना द्वारा हिरासत में ली जाने वाली महिलाओं में से 50 प्रतिशत को निर्वस्त्र किया जाता है। अमरीका के 67 प्रतिशत दंपतियों के बीच हिंसक घटनाएँ होती हैं। अमरीका जैसे विकसित देश

***असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एम.ए. कॉलेज, एल.एन.एम.यू., दरभंगा**